SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अभनपुर क्षेत्र में कार्यरत् एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता बेक, पी.एच–डी., अध्यापक शिक्षण संस्थान
पंडित रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुनीता बेक, पी.एच–डी.
E-mail : sunitabeck87@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/03/2025
Revised on : 02/05/2025
Accepted on : 13/05/2025
Overall Similarity : 01% on 03/05/2025

शोध सार

शिक्षा प्रकाश का यह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति का सच्चा पथ प्रदर्शन करती है। परिवार में मालक की माता ही उनकी प्रथम शिक्षिका या गुरू होती है। जो उनके सृजनशील विकास करने में उसका पथ–प्रदर्शन करने में एक विश्वरानीय मित्र की तरह जीवन पर्यन्त उसकी मदद करती है। एक परिवार के नैतिक मूल्य, परम्पराएँ, सामाजिक स्थिति, विचार आदि का प्रभाव बालक के व्यक्तित्त्व पर अवश्य ही चडता है, जिससे वह एक आदर्श व योग्य नागरिक बनता है। ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' अर्थात् जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होते है। संवेग की विशेषता के आधार पर यह कहा जा राकता है की संवेगों की बुद्धि पर विशेष प्रभाव पड़ता है। बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की तत्परता, तात्कालिकता, समायोजन तथा समस्या समाधान की समताओ के संदर्भ में प्रयोग होता है मानसिक योग्यता ही उनके असमान होने का प्रमुख कारण है। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य उस समग्र समता से है जो उसकी विचार प्रक्रिया उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरो के संवेगो को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबंध करने में सहायता करती है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, महिला, बच्चे, समाज, परंपरा.

प्रस्तावना

मानव समाज का स्वरूप काफी व्यापक और गतिशील है। आज पूरे समाज को पुनः उत्थान की आवश्यकता है। इस पुन उत्थान का कार्य करने में जो प्रक्रिया महत्पूर्ण भूमिका निभा सकती है वह है 'शिक्षा' परंतु शिक्षा की प्रक्रिया भी परिवर्तनों से अछूती नहीं वरन् समाज के अन्य पहलुओं में आए परिवर्तनों से प्रभावित

होती रहती है। शिक्षा मानव जीवन का आधार है। शिक्षा मानव के व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। शिक्षा को केवल शाब्दिक परिभाषा के परीसिमन में नहीं बांधा जा सकता है इसका अर्थ वृहद है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो ''जीवन पर्यन्त चलती है।'' शिक्षा एक अनन्त प्यास है, जिसका संबंध केवल जीने की कला मात्र से नहीं है अपितु वह स्वयं जीवन के आदशों से जुड़ी हुई हैं।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक, व्यक्तिगत और व्यवसायिक जीवन में सफलता के नये आयाम का एक विचार है। व्यक्ति की सफलता में संदेगात्मक बुद्धि का अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा हम स्वयं के तथा दूसरो के संवेगो को समझ सकते है, उनके बीच अंतर को जान सकते है और कार्य को उचित दिशा प्रदान कर सकते है। केवल बुद्धि बालको को जीवन की समस्याओं को हल करने के योग्य नहीं बनानी है, बुद्धि के साथ–साथ संवेग और संवेगात्मक बुद्धि का महत्पूर्ण स्थान है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में भय, सुख–दुःख, क्रोध आदि का अनुभव करता है। वह ऐसा व्यवहार किसी उत्तेजनावश करता है, यह उत्तेजना संवेग कहलाती है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत समस्या अध्ययन की दृष्टि से महत्पूर्ण है क्योकि बदलते परिदृश्य में कार्यरत व घरेलू महिलाओ के विद्यार्थियो का विद्यालयी स्तर एक जैसा होने पर भी परिवारिक स्तर में कुछ भिन्नता होती है तथा ऐसी महिलाओ के विद्यार्थियो को किन समस्याओं का सामना करना पडता है। उनकी संवेगात्मक बुद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसका ज्ञान आवश्यक है और यह ज्ञान हम अध्ययन के द्वारा ज्ञात कर सकते है।

समस्या

किसी भी क्षेत्र से संबंधित अनुसंधान हो तो समस्या का चयन प्रत्येक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जब तक मानव ने अपने जीवन में समस्याओं की अनुभूति नहीं की हम आदि मानव ही बने रहे। मानव ने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो साधन अपनाये वे जब–जब संतुष्ट नही हुये तब–तब समस्या उत्पन्न हुई अर्थात् आवश्यकता की संतुष्टि ही समस्या है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कार्यरत् एवं घरेलू महिलाओ के बालको की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कार्यरत् एवं घरेलू महिलाओं के बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_{01} कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ के बालको के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_{02} कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ के बालिकाओ की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_1 कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ के बालक एवं बालिकाओ की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

महिलाओं के छात्रों का प्राप्तंक

क्रमांक	वर्ग या संकाय	संख्या	माध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी मूल्य	स्वतंत्र अंश	परिणाम
1.	कामकाजी महिलाओं के छात्र	25	68.44	8.22	3.11	48	0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2.	घरेलू महिलाओं के छात्र	25	60.96	8.74			

(स्त्रोतः प्राथमिक संमक)

प्रत्यकों की तालिका

क्र.	वर्ग या संप्राय	संख्या	माध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी मूल्य	स्वतंत्र अंश	परिणाम
1.	कामकाजी महिलाओं के छात्रायें	25	70.92	5.92	4.2	48	0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है।
2.	घरेलू महिलाओं के छात्रायें	25	63.2	6.61			

(स्त्रोतः प्राथमिक संमक)

साख्यिकी विश्लेषण द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए

H_{01} कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ के बालको की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

व्याख्या

परिकल्पना 1 का मूल्यांकन तथा विश्लेषण उपयुक्त आंकडो द्वारा किया गया, जिसमें कामकाजी महिलाओं के छात्रो का मध्यमान 68.44 तथा घरेलू महिलाओं के छात्रों का मध्यमान 60.96 आया। इसी प्रकार दोनो का प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.22 एवं 8.75 प्राप्त हुआ इन दोनो के मध्य। मूल्य 3.11 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थक पाया गया। घरेलू छात्र की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना – अस्वीकृत होती है और यह कहां जा सकता है कि कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ के छात्रों की सवेगात्मक बुद्धि में अंतर पाया जायेगा।

H_{02} कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

व्याख्या

परिकल्पना 2 का मूल्यांकन तथा विश्लेषण उपयुक्त आंकड़ो द्वारा किया गया जिसमें कामकाजी महिलाओ की छात्राओं का मध्यमान 70.92 तथा घरेलू महिलाओ की छात्राओं का मध्यमान 63.2 आया। इसी प्रकार दोनो का प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.90 तथा 6.61 प्राप्त हुआ। इन दोनो का मध्य टी–मूल्य 4.2 प्राप्त हुआ इसलिए 0.05 विश्वास स्तर पर कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया, अतः परिकल्पना – 2 अस्वीकृत होती है और यह कहा जा सकता है कि कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर पाया जायेगा।

H_{1} घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बलिकाओ की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया जायेंगा।

व्याख्या

परिकल्पना–3 का मूल्यांकन तथा विश्लेषण उपयुक्त आंकडो द्वारा किया विद्यार्थियों का मध्यमान 60.68 एवं घरेलू महिलाओ के विद्यार्थियों का मध्यमान 6208 आया। इसी प्रकार दोनों का प्रमाणिक विचलन क्रमशः 7.15 तथा 7.75 टी– मूल्य 5.12 प्राप्त हुआ जो कि 005 स्तर पर सार्थक पाया गया इसलिए 0.05 विश्वास स्तर पर कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं के विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया, अतः परिकल्पना 3 स्वीकृत होती है और कहा जा सकता है कि कामकाजी एक घरेलू महिलाओ के विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया जायेगा।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी परिकल्पनाओ के संख्यिकीय विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष नकलता है कि कामकाजी एवं घरेलू महिलाओ के उच्चतर माध्यमिक स्तर के वद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सुझाव

1. ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शालाओ के विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों में कार्यरत् नियमित अध्यापको एवं शिक्षाकर्मियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. माध्यमिक स्तर की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया जा सकता है।
4. अशिक्षित अभिभावको के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रनाक का अध्ययन किया जा सकता है।
5. हाईस्कूल स्तर के छात्रो की संवेगात्मक बुद्धि पर वातावरणीय प्रभाव अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अस्थाना, विपिन; एवं अस्थाना, श्वेता (2009) *मनोविज्ञान और शिल मापन एवं मूल्यांकन,* असवाल पब्लिकेशन आगरा, पृ. 205।
2. भटनागर, सुरेश (2005) *शिक्षा मनोविज्ञान,* आर लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 448–449।
3. पाठक, पी. डी (2005) *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 66–67।
4. मंगल, एस. के (2002) *उन्नत शैक्षणिक मनोविज्ञान,* द्वितीय सम्पादन प्रो. एण्ड हैड, डिपार्टमन्ट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज ई. आर. कालेज ऑफ एजुकेशन, रोहतक, हरियाणा।

****